पाठ के उद्देश्य
- पर्यटन
- प्रकृति सौंदर्य

10 सीढ़ीदार खेत

अमित सिलीगुड़ी में रहता था। उसके पापा डॉक्टर होने के कारण बहुत व्यस्त रहते थे। अत: वे अमित को छुट्टियों में कहीं घुमाने भी नहीं ले जा पाते थे। पिछले साल अमित के अध्यापक उसकी कक्षा को टूर पर काजीरंगा लेकर गए थे। लेकिन अमित नहीं जा पाया था। आज कक्षा में अध्यापकजी ने बच्चों को दार्जिलिंग के टूर के बारे में सूचित किया। इच्छुक विद्यार्थियों को अपना नाम नियत राशि के साथ जमा करने के लिए एक सप्ताह का समय भी दिया। 'टूर' शब्द अमित के लिए रोमांच भरा और जिज्ञासावाला था। अत: इस बार अमित ने सोच लिया था कि वह भी स्कूल के और बच्चों के साथ टूर पर दार्जिलिंग ज़रूर जाएगा। परंतु समस्या यह थी कि पापा से दार्जिलिंग जाने की बात कैसे कहे। शाम को क्लीनिक से आकर पापा चाय पीने लगे। अमित ने सोचा कि बात करने का यही उचित समय है। वह आकर धीरे से बोला–

"पापा! पापा! आप मना तो नहीं करेंगे?"

"बेटा किस बात के लिए?"

अध्यापन संकेत : इस पाठ के माध्यम से बच्चों को सीढ़ीदार खेतों की जानकारी दें। सीढ़ीदार खेत प्राय: पहाड़ी क्षेत्रों में होते हैं। उन्हें बताएँ कि दार्जिलिंग में भी चाय की खेती की जाती है।

"पापा, हमारी कक्षा के बच्चे टूर पर दार्जिलिंग जा रहे हैं। मैं भी टूर पर जाना चाहता हूँ।"

"ठीक है सोचूँगा। कितने बच्चे जा रहे हैं?"

"पापा! कक्षा के अधिकतर बच्चे जा रहे हैं। प्लीज़, मुझे भी जाने दीजिएगा।"

थोड़ी देर तक अमित के पापा सोचते रहे फिर उन्होंने अमित को आज्ञा दे दी।

बस, फिर तो अमित ने तुरंत ही अपने मित्रों को फ़ोन कर दिया। अगले दिन उसने स्कूल में पहुँचते ही सर को टूर पर जाने की राशि दे दी और बेसब्री से टूर पर जाने के दिन का इंतज़ार करने लगा।

आज खुशी के मारे अमित का चेहरा फूल-सा खिल रहा था, क्योंकि अगले दिन सुबह ही उसे बस से जाना था। अमित के साथ सभी बच्चे दार्जिलिंग जैसा खूबसूरत पहाड़ियों का शहर देखने के लिए उत्साहित थे। अमित की मम्मी ने कुछ गरम कपड़े भी अटैची में रख दिए। साथ में कुछ नाश्ते का सामान बिस्कुट, दालमोठ, मठरी और लड्डू भी रख दिए। खाने का सामान देखकर तो अमित फूला नहीं समाया। टूर पर जाने के उत्साह के कारण अमित सुबह जल्दी-जल्दी उठकर तैयार हो गया। वह अटैची लेकर पापा के पास जाकर खड़ा हो गया और पापा का हाथ पकड़कर प्यार से बोला-"पापा प्लीज़, मुझे स्कूल छोड़ आइए। अगर देर हो गई तब मैं यहीं रह जाऊँगा।"

अपने बेटे की उत्सुकता और चाहत को देखकर अमित के पापा उसे तुरंत स्कूल छोड़ने के लिए चल दिए। रास्ते-भर अमित के पापा उसे समझाते रहे कि बेटा ज़्यादा शैतानी मत करना, टीचर के साथ रहना, उनका कहना मानना, पहाड़ों की ज़्यादा ऊँचाई पर चढ़कर नीचे मत झाँकना, गर्म कपड़े पहने रहना और अकेले मत घूमना।

अपने पापा की हर बात पर अमित 'हाँ' कहता रहा। बस, इसी तरह बातों ही बातों में स्कूल आ गया।

स्कूल पहुँचकर अमित ने देखा कि बस तैयार खड़ी थी। सर कुछ बच्चों के साथ बस में बैठे हुए थे। कार से उतरकर अमित झटपट अटैची लेकर बस में बैठ गया। सब बच्चों के बस में बैठते ही बस चल दी।

अपने विद्यार्थी जीवन में अमित पहली बार साथियों के साथ टूर पर जा रहा था। सर ने सब बच्चों को कुछ बातें सावधानी बरतने के लिए समझाईं। फिर बच्चों को

खाने के लिए मठरी एवं मीठे बिस्कुट छोटी-छोटी थैलियों में डालकर दिए। खाने के बाद गानों का कार्यक्रम चला। किसी ने गीत, किसी ने कविता, किसी ने गज़ल सुनाई।

इसी तरह बस का सफ़र चलता रहा। सर बच्चों का मनोरंजन करवाते रहे। बस मैदान पार करके कब पहाड़ों पर आ गई, पता ही नहीं चला। इसका पता तब लगा जब बस दार्जिलिंग की टेढ़ी-मेढ़ी पहाड़ी सड़कों पर लहराती, बलखाती चल रही थी।

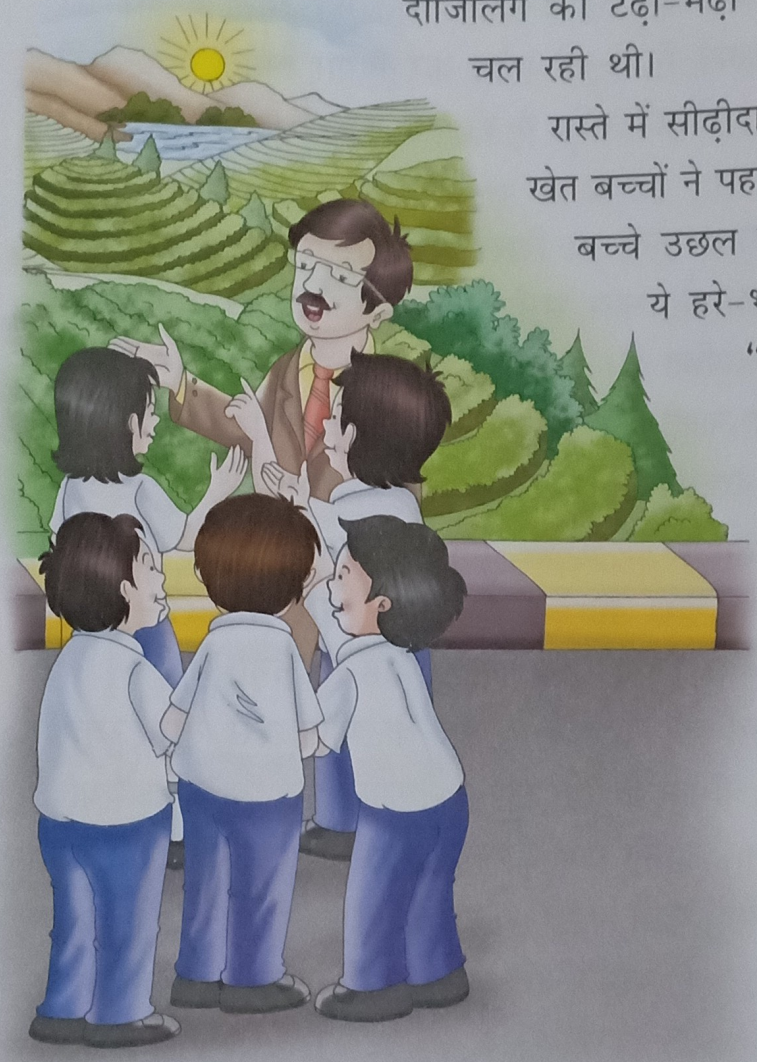

रास्ते में सीढ़ीदार खेत दिखाई दे रहे थे। ऐसे सीढ़ीदार खेत बच्चों ने पहली बार देखे। ऐसे हरे-भरे खेत देखकर बच्चे उछल पड़े और सब एक साथ बोले–"सर, ये हरे-भरे सीढ़ियों जैसे खेत किसके हैं?"

"बच्चो, ये चाय के बागान हैं?"

"क्या! चाय के और वे भी हरे-भरे!!"

"हाँ बच्चो, ये सब चाय के बागान हैं।"

सर ने बच्चों को चाय के बागान दिखाने के लिए बस को एक उपयुक्त स्थान पर रुकवा दिया। बस के रुकते ही बच्चे सावधानी से उतर गए और बड़े आश्चर्य से चाय के बागानों को देखने लगे। सबसे पहले दीपक ने प्रश्न किया–"सर, चाय की खेती इस तरह क्यों की जाती है?"

"बेटा, सर्वप्रथम इसके लिए धूपदार मौसम और पर्याप्त बारिश की ज़रूरत पड़ती है। चाय समतल मैदानों में पैदा नहीं की जाती, क्योंकि वहाँ पर सीढ़ियाँ बनाकर खेती नहीं कर सकते हैं।"

"सर, सीढ़ियाँ क्यों बनाते हैं?"–एक साथ कई बच्चों ने पूछा।

"बच्चो, चाय के ऐसे पौधे बीजों से तैयार किए जाते हैं। जब पौधा बड़ा हो जाता है, तब उसे सीढ़ीदार या ढलानदार खेतों में रोपा जाता है क्योंकि चाय के पौधों की जड़ों को ठहरे हुए पानी से बचाया जाता है और इस तरह के खेतों में पानी ठहरता नहीं है। आगे बहता ही जाता है।"

"सर, यह बात तो समझ में आ गई, लेकिन एक और आश्चर्य की बात है कि इन चाय की पत्तियों को केवल महिलाएँ ही तोड़ रही हैं। यहाँ कोई पुरुष क्यों नहीं हैं?"–अमित बोला।

"हाँ बच्चो, यह खास बात है कि पुरुष इन पत्तियों को नहीं तोड़ते क्योंकि चाय की पत्तियाँ नरम होती हैं और पुरुषों के हाथ सख्त। बस, इसीलिए औरतें और लड़कियाँ ही चाय की पत्तियाँ तोड़ती हैं। चाय के पौधे 1.5 मीटर से लंबे नहीं किए जाते हैं। जानते हो, क्यों? क्योंकि इनकी पत्तियों को तोड़ना फिर मुश्किल हो जाएगा।"

बीच में ही शरद बोला–

"सर, यह पत्तियाँ साल में कितनी बार तोड़ी जाती हैं?"

"साल में तीन बार चाय की पत्तियों की चुनाई होती है–बरसात, गरमी और शरद ऋतु में। अच्छा बच्चो, अब होटल चलते हैं जहाँ पर हम लोगों को ठहरना है। वहाँ भोजन करके आप सब सो जाना। फिर सुबह घूमने भी तो जाना है।"

"अच्छा सर"–कहकर सभी बच्चे बस में बैठ गए।

दार्जिलिंग का मौसम उन्हें बहुत अच्छा लग रहा था। वहाँ की ठंडी-ठंडी हवा का वे खूब आनंद ले रहे थे।

लहराती, बलखाती, ऊँची-नीची सड़कों पर चलती हुई बस शीघ्र ही होटल पहुँच गई।

सब बच्चे बस से उतरे और अपना सामान लेकर अपने-अपने कमरों में चले गए। उनके कमरों में टी.वी. भी रखे हुए थे जिन्हें चालू करके उन्होंने कुछ देर अपने मनपसंद कार्यक्रम देखे। उसी समय सर अमित के कमरे में आए और बोले–"कल हम लोग एक फ़ैक्टरी जाएँगे जहाँ चाय तैयार होती है।"

"हाँ सर, हम लोग आपसे पूछने ही वाले थे कि यह पत्तियाँ तो हरी होती हैं लेकिन प्रयोग होने वाली चाय प्रायः काले या गहरे भूरे रंग की होती है। ऐसा क्यों होता है?"–अमित बोला।

"वही तो कल हम लोग फ़ैक्टरी जाकर देखेंगे।"

"अच्छा सर"–कहकर थके हुए बच्चे शीघ्र ही खाना खाकर सो गए। सुबह दस बजे तक सभी बच्चे स्नान करके तैयार हो गए और नाश्ता करके सर के साथ चाय की फ़ैक्टरी देखने चल दिए।

जब वे फ़ैक्टरी पहुँचे तो वहाँ चाय की पत्तियाँ सुखाई जा रही थीं। कहीं सूखी पत्तियों पर खमीर उठाने के लिए पानी का छींटा दिया जा रहा था तो कहीं सूखी मुरझाई तैयार पत्तियाँ छानी जा रही थीं। वहाँ बड़ी चाय और छोटी चूरा चाय अलग-अलग तैयार हो रही थी। अंत में तैयार चाय मशीनों द्वारा डिब्बों में भरी जा रही थी। डिब्बों में भरने से पहले एक जगह सूखी पत्तियों पर बेलन घुमाया जा रहा था। इससे पत्तियों का एक समान आकार हो रहा था।

यह सब देखकर बच्चे बहुत खुश हुए। फिर अमित ने सर से कहा–"सर, अब हमने यह तो जान लिया कि चाय कैसे तैयार होती है। अब हम दार्जिलिंग में क्या देखेंगे?"

अमित की बात सुनकर सर खूब ज़ोर से हँसे और बोले–"कल सुबह हम सब टाइगर हिल जाएँगे, जहाँ से सूर्योदय के समय पूरी हिमालय की पर्वत शृंखला दिखाई देती है।"

सब बच्चे फिर से होटल पहुँचने के लिए खुशी-खुशी बस में बैठ गए।

–निर्मला सिंह

नए शब्द

स्वर – आवाज़
उत्सुकता – प्रबल इच्छा, बेचैनी
समतल – बराबर, चौरस
रोपना – लगाना
नरम – मुलायम
सख्त – कठोर
जिज्ञासा – जानने की इच्छा
सूर्योदय – सूर्य का निकलना
प्रयोग – इस्तेमाल
शृंखला – कतार, पंक्ति

अभ्यास

श्रुतलेख
Listening and Writing Skills

सिलीगुड़ी	व्यस्त	छुट्टियों	काजीरंगा	दार्जिलिंग	इच्छुक
सप्ताह	उत्साहित	सीढ़ीदार	उपयुक्त	कार्यक्रम	शृंखला

पाठ की बात
Comprehension Skills

1. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

मौखिक

(क) अमित की कक्षा टूर पर कहाँ जा रही थी?
(ख) बस में बच्चों को खाने के लिए क्या दिया गया?
(ग) चाय के पौधे कितने लंबे होते हैं?
(घ) अंत में चाय डिब्बों में कैसे भरी जा रही थी?

लिखित

(क) अमित के पापा छुट्टियों में उसे घुमाने क्यों नहीं ले जा पाते थे?

(ख) अमित में अपूर्व उत्साह क्यों झलक रहा था?

(ग) चाय की खेती के लिए कैसे मौसम की ज़रूरत होती है?

(घ) चाय की पत्तियों को केवल महिलाएँ ही क्यों तोड़ती हैं?

(ङ) चाय की खेती सीढ़ीदार या ढलाईदार खेतों में क्यों की जाती है?

2. सही उत्तर चुनकर (✓) लगाइए।

(क) अमित कहाँ रहता था?

◯ सिलीगुड़ी में ◯ काजीरंगा में ◯ दार्जिलिंग में

(ख) अमित के पापा क्या थे?

◯ इंजीनियर ◯ डॉक्टर ◯ व्यापारी

(ग) चाय की पत्तियाँ साल में कितनी बार तोड़ी जाती हैं?

◯ तीन ◯ दो ◯ चार

3. किसने कहा, किससे कहा?

(क) "ठीक है सोचूँगा। कितने बच्चे जा रहे हैं?"

किसने कहा – _____ किससे कहा – _____

(ख) "मैं भी टूर पर जाना चाहता हूँ।"

किसने कहा – _____ किससे कहा – _____

(ग) "पुरुष इन पत्तियों को नहीं तोड़ते।"

किसने कहा – _____ किससे कहा – _____

(घ) "यह पत्तियाँ साल में कितनी बार तोड़ी जाती हैं?"

किसने कहा – _____ किससे कहा – _____

भाषा की बात

Language and Vocabulary Skills

1. नीचे दिए गए वाक्यों में कोष्ठक से सही शब्द चुनकर लिखिए।

(क) अमित ने सोचा ___कि___ बात करने का यही उचित समय है। (कि/और)

(ख) अमित का चेहरा फूल-सा खिल रहा था _____ अगले दिन सुबह ही उसे बस से जाना था।
(क्योंकि/परंतु)

(ग) ठंडी हवा _____ चमचमाती धूप में बच्चे खूब आनंद ले रहे थे।
(अन्यथा/और)

(घ) पिछले साल अमित के सर टूर लेकर काजीरंगा गए थे _____ अमित नहीं जा पाया था।
(लेकिन/और)

2. नीचे दिए गए शब्दों के लिंग बदलिए।

स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
महिला	पुरुष	सेठ	
लड़की		युवक	
मालिन		सम्राट	
अभिनेत्री		विद्वान	
कवयित्री		बादशाह	

3. नीचे दिए गए द्वित्व व्यंजनों से तीन-तीन शब्द बनाइए।

ड्ड =	लड्डू	गुड्डा	गड्डी
म्म =			
च्च =			
त्त =			
ब्ब =			

4. सही उत्तर चुनकर (✓) लगाइए।

(क) 'उत्सुकता' शब्द में कौन-सा प्रत्यय है?
- ◯ कता
- ◯ आ
- ◯ ता

(ख) 'फूला नहीं समाना'–इस मुहावरे का क्या अर्थ है?
- ◯ फूल जाना
- ◯ बहुत दुखी होना
- ◯ बहुत खुश होना

(ग) प्रत्येक पंक्ति में किस शब्द की वर्तनी गलत है?
- ◯ दारजलिंग
- ◯ ज़रूरत
- ◯ सर्वप्रथम

उपयुक्त	काजीरंगा	प्रयाप्त
श्रृंखला	कार्यक्रम	सूर्योदय
शीघ्र	आश्चर्य	जहां

5. विशेषण और विशेष्य के जोड़े बनाइए।

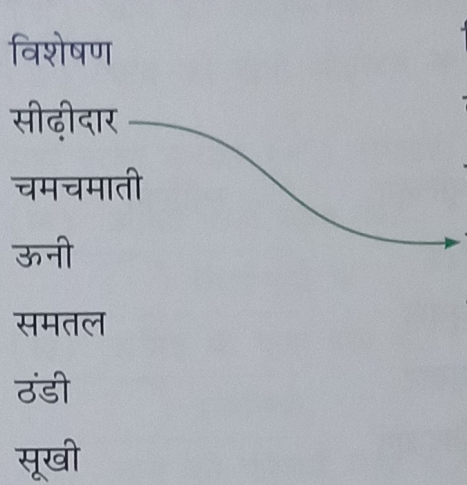

विशेषण-विशेष्य

सीढ़ीदार खेत

6. नीचे दिए गए वाक्यों में उचित सर्वनाम अथवा क्रिया शब्दों का सही रूप में प्रयोग करके वाक्य पूरा कीजिए।

(क) मुझे कार खरीदनी है। (मैं)

(ख) उसने एक चित्र _____ है। (बना)

(ग) _____ कल से बीमार है। (उसे)

(घ) _____ पुस्तक खो गई। (मुझे)

(ङ) बीमार व्यक्ति _____ है। (सोना)

7. पाठ से दो युग्म-शब्द ढूँढ़कर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।

(क) _____

(ख) _____

मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills

1. घर से बाहर घूमने जाते समय आप क्या-क्या सावधानियाँ रखते हैं?
2. पर्यटन हमारे लिए क्यों ज़रूरी है? अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

सोच-समझ की बात

Thinking and Logical Skills

- मान लीजिए आप घूमने के लिए जून में केरल जा रहे हैं। आप अपने साथ कौन-सा ज़रूरी सामान ले जाएँगे और क्यों? सामान की एक सूची बनाइए।

कुछ करने की बात

Writing and Creative Skills

1. अपने मित्र को पत्र या ई-मेल लिखकर अपनी किसी यात्रा के बारे में बताइए।
2. दार्जिलिंग के बारे में इंटरनेट से जानकारी एकत्रित करके सचित्र परियोजना तैयार कीजिए।
3. मित्र के साथ किसी पहाड़ी यात्रा की योजना बनाते हुए संवाद लिखिए।
4. चित्र देखकर अपने विचार लिखिए।